

中外传世

儿童故事

中国

成语故事

下

珍藏版

ZHONGGUOCHENGYUGUSHI(XIA)

了知 / 编



中国少年儿童出版社

了之編

成語故事

(下)

中外傳世兒童故事



中國少年兒童出版社

编者说明

为了满足广大少年儿童的不同需要,本社选编了这套《中外传世儿童故事》丛书。本书在选编过程中,得到许多作者的帮助和支持,在此谨表示衷心的感谢。

需要特别说明的是,由于部分作者的工作单位和通讯地址不详,编者一时未能和作者取得联系,我们恳请作者对此能予以谅解,并请与出版社取得联系,以便办理相关合同、寄送稿费和样书的事宜。

目录



CONTENTS

七 画

- 1 形单影只
3 庐山真面目
5 吹皱一池春水

八 画

- 8 卖刀买牛
10 杯水车薪
12 杯盘狼藉
14 拔本塞源
16 拔山扛鼎
19 披肝沥胆
21 披荆斩棘
23 英雄无用武之地

目录

CONTENTS

- | | |
|----|------|
| 25 | 单刀直入 |
| 26 | 学富五车 |
| 28 | 空前绝后 |
| 30 | 宠辱不惊 |
| 32 | 虎口余生 |
| 34 | 明见万里 |
| 36 | 明珠暗投 |
| 39 | 明发不寐 |
| 40 | 卓尔不群 |
| 42 | 罗雀掘鼠 |
| 44 | 瓮中捉鳖 |
| 46 | 鱼目混珠 |
| 47 | 鱼传尺素 |
| 49 | 所向无前 |
| 51 | 欣欣向荣 |
| 53 | 驾轻就熟 |
| 54 | 始乱终弃 |
| 56 | 始作俑者 |
| 58 | 画中有诗 |
| 61 | 虎踞龙蟠 |
| 63 | 杳如黄鹤 |
| 66 | 河东狮吼 |
| 68 | 狐死首丘 |

目录

CONTENTS

- | | | |
|-----|--------------|------|
| 70 | 孤苦伶仃 | 载载子立 |
| 72 | 孤芳自赏 | |
| 75 | 奇文共赏 | |
| 78 | 抱布贸丝 | |
| 80 | 孟母三迁 | |
| 82 | 招摇过市 | |
| 84 | 物换星移 | |
| 86 | 秉烛夜游 | |
| 88 | 放浪形骸 | |
| 90 | 怏怏不乐 | |
| 93 | 贫贱之交 | |
| 95 | 郁郁寡欢 | |
| 97 | 环肥燕瘦 | |
| 99 | 视死如归 | |
| 102 | 视同儿戏 | |
| 105 | 国士无双 | |
| 107 | 采薪之忧 | |
| 109 | 金戈铁马 | |
| 112 | 金城汤池 | |
| 115 | 青天白云 | |
| 117 | 青梅竹马 | 两小无猜 |
| 119 | 青云直上 | |
| 121 | 青山遮不住, 毕竟东流去 | |

目录

CONTENTS

九画

- | | |
|-----|------------|
| 124 | 指天画地 |
| 126 | 相敬如宾 |
| 128 | 相得益彰 |
| 130 | 草菅人命 |
| 132 | 南箕北斗 |
| 133 | 甚嚣尘上 |
| 135 | 悔之无及 |
| 136 | 洪水猛兽(率兽食人) |
| 139 | 举棋不定 |
| 140 | 闻雷失箸 |
| 142 | 是古非今 |
| 144 | 背城借一 |
| 146 | 侯门如海(陌路萧郎) |
| 148 | 信口雌黄 |
| 150 | 食言而肥 |
| 151 | 独步一时 |
| 153 | 骇人听闻 |
| 155 | 退避三舍 |
| 157 | 咫尺千里 |
| 159 | 前度刘郎 |
| 162 | 狡兔三窟 |

目录

CONTENTS

- | | |
|-----|-------------|
| 165 | 牵萝补屋 |
| 168 | 牵一发而动全身 |
| 171 | 将信将疑 |
| 172 | 春梦无痕 |
| 174 | 草创未就 |
| 176 | 秋扇见捐 |
| 178 | 秋月春风 |
| 181 | 秋风过耳 |
| 183 | 柳暗花明 |
| 185 | 枯木朽株 |
| 187 | 骄兵必败 |
| 190 | 点石成金 |
| 192 | 美如冠玉 |
| 195 | 钩心斗角 |
| 197 | 拾遗补阙 |
| 199 | 轻车熟路 |
| 202 | 窃窃私语 |
| 205 | 语不惊人 |
| 208 | 恻隐之心 |
| 210 | 举一反三 |
| 212 | 急如星火 |
| 214 | 急来抱佛脚 |
| 216 | 冠盖满京华,斯人独憔悴 |

目录

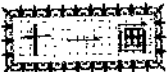
CONTENTS



- | | |
|-----|------------|
| 219 | 泰山压卵 |
| 221 | 顾曲周郎 |
| 222 | 莫逆之交 |
| 224 | 珠联璧合 |
| 226 | 疾风劲草 |
| 228 | 酒囊饭袋 |
| 230 | 请君入瓮 |
| 232 | 兼听则明,偏听则暗 |
| 234 | 兼收并蓄 |
| 236 | 高屋建瓴 |
| 238 | 高谈雄辩 |
| 240 | 高岸为谷,深谷为陵 |
| 242 | 谈笑自若 |
| 244 | 差强人意 |
| 245 | 逢人说项 |
| 247 | 笑里藏刀 |
| 249 | 铁杵磨针 |
| 251 | 豺狼当道 |
| 253 | 息事宁人 |
| 254 | 蚍蜉撼树(光芒万丈) |
| 256 | 海阔天空 |

目录

CONTENTS

- 258 班门弄斧
- 261 剜肉补疮
- 263 流水桃花
- 265 爱莫能助
- 267 涕零如雨
- 269 冥顽不灵
- 271 桃花潭水
- 273 桃李不言,下自成蹊
- 275 晓风残月
- 278 顾影自怜
- 281 俯首帖耳
- 283 胶柱鼓瑟
- 285 秦庭之哭
- 287 家书抵万金
- 290 读书破万卷,下笔如有神
- 
- 292 掷地有声
- 294 盛名之下,其实难副
- 296 盛筵难再
- 298 黄绢幼妇(绝妙好辞)
- 300 黄钟毁弃
- 302 黄袍加身

目录

CONTENTS

- | | |
|-----|-----------|
| 304 | 寄人篱下 |
| 305 | 浙人佳境 |
| 306 | 欲加之罪,何患无辞 |
| 308 | 欲盖弥彰 |
| 310 | 惜墨如金 |
| 311 | 弹冠相庆 |
| 312 | 淡妆浓抹 |
| 315 | 雪泥鸿爪 |
| 317 | 清尘浊水 |
| 320 | 清风两袖 |
| 323 | 盘马弯弓 |
| 326 | 剪烛西窗 |
| 328 | 晨钟暮鼓 |
| 330 | 猛志常在 |
| 332 | 聊胜于无 |
| 335 | 烹龙炮凤 |
| 337 | 绰绰有余 |
| 339 | 滹池之功 |
| 342 | 铤而走险 |
| 344 | 敝帚自珍 |
| 346 | 望秋先零 |
| 348 | 情随事迁 |

目录

CONTENTS

十三画

- | | |
|-----|-----------------|
| 350 | 雄才大略 |
| 352 | 握手言欢 |
| 353 | 雁足捎书 |
| 355 | 敬而远之 |
| 356 | 落落难合 |
| 357 | 落井下石 |
| 359 | 落月屋梁 |
| 361 | 道路以目(防民之口,甚于防川) |
| 363 | 喋喋不休 |
| 365 | 凿壁偷光 |
| 366 | 强弩之末 |
| 368 | 啼笑皆非 |
| 371 | 程门立雪 |
| 373 | 温情脉脉 |
| 375 | 黍离麦秀 |
| 377 | 遇人不淑 |
| 379 | 馋涎欲滴 |
| 381 | 斑驳陆离 |
| 383 | 鼎足之势 |
| 385 | 惴惴不安 |
| 387 | 欺世盗名 |

目录

CONTENTS

- | | |
|-----|------------|
| 389 | 短兵相接 |
| 391 | 短小精悍 |
| 393 | 短褐穿结 |
| 395 | 琵琶别抱 |
| | 十三画 |
| 397 | 数典忘祖 |
| 399 | 睚眦必报 |
| 401 | 解弦更张(目不窥园) |
| 403 | 解衣推食 |
| 405 | 感激涕零 |
| 408 | 楚材晋用 |
| 410 | 暗箭伤人 |
| 412 | 暗香疏影 |
| 414 | 痴人说梦 |
| 416 | 腾蛟起凤 |
| 418 | 蜂拥而起 |
| 420 | 鉴往知来 |
| 421 | 雾里看花 |
| | 十四画 |
| 424 | 暮夜怀金 |
| 425 | 暮云春树 |

目录

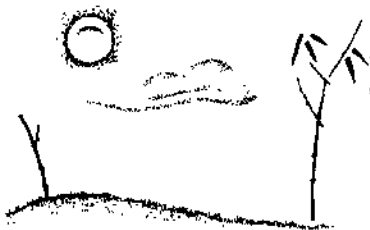
CONTENTS

- 428 潢池弄兵
430 竭泽而渔
432 管中窥豹(可见一斑)
434 管鲍之交
436 精卫填海
438 箪食壶浆
440 摧枯拉朽
442 褐衣不完
444 蜻蜓点水
446 嘤其鸣矣,求其友声
- 十五画以上
- 448 鹤立鸡群
450 戮力同心
452 嬉笑怒骂
454 横槊赋诗
456 踔厉风发
458 蹉跎岁月
460 雕虫小技
463 避实就虚
465 避其锐气,击其惰归
467 篝火狐鸣
470 豁然开朗

目录

CONTENTS

- | | |
|-----|-----------|
| 472 | 藏之名山,传之其人 |
| 474 | 瞻前顾后 |
| 476 | 魑魅魍魉 |
| 478 | 攀花摘木 |
| 482 | 囊括四海 |
| 484 | 囊萤照读 |
| 485 | 穰穰满家 |



形单影只

这个成语故事出自唐代韩愈《祭十二郎文》。形：身体；只：独。

十二郎，是韩愈长兄韩会的继子，次兄韩介之子，名老成。韩老成，在韩族中排行十二，故称“十二郎”。韩愈三岁丧父，由他的长兄韩会夫妇抚养长大，因而他与十二郎长期生活在一起，感情十分深厚。韩愈在这篇祭文中，通过对一系列家常琐事的回忆，倾注了作者对十二郎的早逝的无限悲痛之情。祭文在对死者的吊慰，一开头就悲痛地诉说道：

呜呼！吾少孤，及长，不省所怙，惟兄嫂是依。中年，兄歿南方，吾与汝俱幼，从嫂归葬河阳。既又与汝就食江南，零丁孤苦，未尝一日相离也。吾上有三兄，皆不幸早世。承先人后者，在孙惟汝，在子惟



吾。两世一身，形单影只。嫂尝抚汝指吾而言曰：“韩氏两世，惟此而已！”汝时尤小，当不复记忆；吾时虽能记忆，亦未知其言之悲也！

孤：幼年无父为孤，也常用作称幼年丧父母；省：知道，明白；怙（音 hù 护）：依靠，旧时专指对父亲的依靠，即指父亲，失怙即为丧父；中年：指韩会在韩愈十岁那年贬官韶州（今广东韶关市西）刺史，后死在任上，时年四十三岁；歿：死亡；河阳：地名，今河南孟县西；就食：谋生；江南：指公元 781 年（唐德宗建中二年），中原地区多兵乱，韩愈随嫂迁居宣州（今安徽宣城）；早世：早没于世，早死；尤小：更加小。

这段话的意思是：唉，我幼年丧父，等到长大了，还不知道父亲是什么样子，全靠哥哥嫂嫂过活。哥哥中年时就在南方去世，那时我与你都很小，跟随嫂嫂把灵柩送回河阳安葬。后来又和你避乱到江南谋生，我们两个孤儿，从来没有一天分离过。我上面有三个哥哥，都不幸早逝。继承先父的后代，在孙子辈里只有你，在儿子辈里只有我。子孙两代人各剩一人，孤单无伴。嫂嫂曾经抚摸着你说：“韩家两代，就只有你们两个人了！”那时你比我更小，当然不会再记得了；我当时虽然已能记事，但也不能体谅到她说这话时的悲哀啊！

后来，“形单影只”被引申为成语，用来形容孤独无伴。